© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 01 | January - March 2022

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के जीवन परिचय पर अध्ययन

राम जुवारी पी. एच. डी. शोधार्थी

इतिहास विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा, (म०प्र०)

सारांश

बाल गंगाधर तिलक जन्म से केशव गंगाधर तिलक, एक भारतीय राष्ट्रवादी, शिक्षक, समाज सुधारक, वकील और एक स्वतन्त्रता सेनानी थे। ये भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के पहले लोकप्रिय नेता हुएँ जिन्हें ब्रिटिश औपनिवेशिक प्राधिकारी "भारतीय अशान्ति के पिता" कहते थे। उन्हें, "लोकमान्य" का आदरणीय शीर्षक भी प्राप्त हुआ, जिसका अर्थ हैं लोगों द्वारा स्वीकृत। इन्हें हिन्दू राष्ट्रवाद का पिता भी कहा जाता है। तिलक ब्रिटिश राज के दौरान स्वराज के सबसे पहले और मजबूत अधिवक्ताओं में से एक थे, तथा भारतीय अन्तःकरण में एक प्रबल आमूल परिवर्तनवादी थे।

मूल शब्द : भारतीय, राष्ट्रवाद, स्वराज्य, स्वतंत्रता, राजनीतिक, इत्यादि।

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के जनक, स्वराज्य की माँग रखने वाले और कांग्रेस की उग्र विचारधारा के समर्थक बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई 1856 को रत्नागिरि जिले के चिकल गाँव तालुका में हुआ था। इनके पिता का नाम गंगाधर रामचन्द्र पंत व माता का नाम पार्वती बाई गंगाधर था। कहते हैं कि इनकी माता पार्वती बाई ने पुत्र प्राप्ति की इच्छा से पूरे अश्विन महीने (हिन्दी कलैण्डर का महीना) में निर्जला व्रत रखकर सूर्य की उपासना की थी, इसके बाद तिलक का जन्म हुआ था। इनके जन्म के समय इनकी माता बहुत दुर्बल हो गयी थी। जन्म के काफी समय बाद ये दोनों स्वस्थ्य हुये।

बाल गंगाधर तिलक के बचपन का नाम केशव था और यही नाम इनके दादा जी (रामचन्द्र पंत) के पिता का भी था इसलिये परिवार में सब इन्हें बलवंत या बाल कहते थे, अतः बाद में इनका नाम बाल गंगाधर पड़ा। इनका बाल्यकाल रत्नागिरि में व्यतीत हुआ। बचपन में इन्हें कहानी सुनने का बहुत शौक था इसलिये जब भी समय मिलता ये अपने दादाजी के पास चले जाते और उनसे कहानी सुनते थे ।

दादाजी इन्हें रानी लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, गुरु नानक, नानक साहब आदि देशभक्तों और क्रान्तिकारियों की कहानी सुनाते थे। तिलक बड़े ध्यान से उनकी कहानियों को सुनकर प्रेरणा लेते। इन्हें अपने दादाजी से ही बहुत छोटी सी उम्र में भारतीय संस्कृति और सभ्यता की सीख मिली। इस तरह प्रारम्भ में ही इनके विचारों का रुख क्रान्तिकारी हो गया और ये अंग्रेजों व अंग्रेजी शासन से घृणा करने लगे।

बाल गंगाधर तिलक की शिक्षा

तिलक के बाल्य जीवनकाल पर उनके पिता श्री रामचन्द्र पंत और माताजी पार्वती बाई का बड़ा असर पड़ा। ब्राहमण परिवार में जन्म के कारण तिलक को बचपन से ही धार्मिक कार्यो और कट्टरता की भावना पैदा हो गई, इनके पिताजी रामचन्द्र पंत उस समय के विख्यात शिक्षक थे। घर पर ही रहकर तिलक ने अपने पिताजी से संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त किया।

प्रारंभीक शिक्षा घर से प्राप्त करने के बाद बालक तिलक को नजदीकी एक मराठी शाळा में 5 वर्ष की आयु में पढने हेतु भेज दिया। आरम्भिक शिक्षा के साथ-साथ इनकी घर पर विधिवत शिक्षा हुआ करती थी।

जब तिलक 10 वर्ष के थे तो उनका परिवार रत्नागिरी से महाराष्ट्र के पूना शहर आकर बस गया। यहाँ रहते हुए बाल गंगाधर तिलक ने एंग्लों वर्नाक्यूलर स्कूल नाम की एक अंग्रेजी शाळा में अध्ययन किया।

यही पुना में बाल गंगाधर जब 10 साल के थे उन्हें बड़ी हानि उठानी पड़ी इसी वर्ष इनके दादाजी घर छोड़कर सन्यास ले लिया, इसी वर्ष इनकी माताजी पार्वती बाई का निधन हो गया था। जिसके बाद इनके पालन पोषण की जिम्मेदारी चाची के कन्धो पर आ पड़ी।

बाल गंगाधर तिलक का शिक्षक बनना

तिलक ने बीए की डिग्री प्राप्त की इसके बाद उन्होंने वकालत भी की। मगर उनकी समझ यह थी, कि जब तक हमारा समाज शिक्षित एवं जागरूक नही होगा, वे सवतंत्रता और इसके महत्व को नही समझ पाएगे।

नई पीढ़ी के युवाओं की शिक्षित करने के उद्देश्य से तिलक एक शिक्षक के रूप में निजी विद्यालय की स्थापना करना चाहते थे, जिसके लिए बड़ी मात्रा में धन की आवश्यकता थी। अतः उन्होंने प्रसिद्ध मराठी लेखक विष्णु शास्त्री चिपलूणकर से मिले और उन्हें अपने विचार बताए।

इस तरह विष्णु शास्त्री और अन्य देशभक्त लोगों के सहयोग से बाल गंगाधर तिलक ने 1880 में "न्यू इंग्लिश स्कूल" नाम से एक निजी विद्यालय की स्थापना की।

बाल गंगाधर तिलक ने सरकारी शिक्षक की नौकरी छोड़कर अपना पूरा ध्यान इस विद्यालय पर लगाया, कुछ ही वर्षो बाद उनकी मेहनत रंग लाई और यह विद्यालय देश के सर्वश्रेष्ट शालाओ में शामिल हो गया।

इसके विद्यार्थियों की संख्या 300 से बढ़कर 2 हजार तक पहुच गई। विष्णु शास्त्री और तिलक धार्मिक विचारों के व्यक्ति होने के उपरान्त इन्होने विद्यालयी पाठ्यक्रम में धर्म को स्थान देने की बजाय देश की वर्तमान स्थिति पर बच्चों को शिक्षित कर उनमे देशप्रेम की भावना का संचार करने का कार्य किया।

"न्यू इंग्लिश स्कूल" का यह तिलक द्वारा किया गया प्रयास अभूतपूर्व था, उस समय इस तरह के शिक्षण संस्थाओं को सरकार के सहयोग के बिना चलाना बेहद कठिन था। दूसरी तरफ इसाई मिश्निरिज़ तेजी से लोगों के धर्मांतरण की तरफ ले जा रही थी।

ऐसे में बाल गंगाधर तिलक अपने दृढ निश्चय और साहस के साथ इस काम में एक शिक्षक के रूप में जुटे रहे, तिलक बच्चों को गणित, अंग्रेजी और विज्ञान विषयों का अध्ययन करवाते थे। साथ ही उन बच्चों के लिए अलग से पीरियड लिया करते थे, जो सामान्य बच्चों से पिछड़ रहे थे पढ़ाई में कमजोर थे।

राजनीतिक जीवन परिचय

अपनी तीखी और व्यग्यपूर्ण भाषा के साथ अंग्रेजो की क्रूरता को अपने पत्र के माध्यम से आमजन तक पहुचाने वाले बाल गंगाधर तिलक को कई बार जेल भी जाना पड़ा, जिनमे उन्हें मांडले जेल में सबसे अधिक समय व्यतीत करना पड़ा था। तिलक 1889 के आस-पास कांग्रेस के सदस्य बन गये। वे हमेशा नरमपंथी विचारधारा के पूर्णत विरोधी थे। लाल, पाल और बाल जैसे जन नेताओ के कारण भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दो भागो में विभाजित हो गईं थी। 1907 के इस विभाजन में नरम पन्थ और गरम पंथ विचारधारा में बंट चुकी थी। चाकी और खुदीराम बोस के बम धमाकों का खुले तौर पर समर्थन करने के कारण लोकमान्य तिलक को मांडले जेल में डाल दिया था। इसके बाद 1916 में इन्होने मोहमद अली जिन्ना और एनी बेसेंट के साथ मिलकर अखिल भारतीय होम रूल लीग की स्थापना कर होमेरुल आन्दोलन शुरू किया।

समाज सुधार

अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद, तिलक ने सरकारी सेवा के आकर्षक प्रस्तावों को रोका और राष्ट्रीय जागरण खड़े करने के कारण खुद को समर्पित करने का निर्णय लिया। वे एक महान सुधारक थे और अपने पूरे जीवन में उन्होंने महिलाओं की शिक्षा और महिलाओं के सशक्तिकरण के कारणों की वकालत की। तिलक ने अपनी सारी बेटियों को शिक्षित किया और उनकी 16 साल की उम्र तक शादी नहीं करवाई । तिलक ने 'गणेश चतुर्थी' और 'शिवाजी जयंती' पर भव्य समारोह का प्रस्ताव रखा। उन्होंने इन समारोहों की कल्पना की जिसमें भारतीयों के बीच एकता और उत्साही राष्ट्रवादी भावना का भाव उभर आया। यह एक बड़ी त्रासदी है कि उग्रवाद,

तिलक और उनके योगदान के प्रति उनकी निष्ठा को मान्यता नहीं दी गई, वह वास्तव में योग्य थे।

मृत्यु

जलियावाला बाग हत्याकांड की क्रूर घटना से तिलक इतने निराश थे कि उनका स्वास्थ्य गिरता जा रहा था। अपनी बीमारी के बावजूद तिलक ने भारतीयों को आंदोलन को जारी रखने के लिए कहा । वह आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए प्रबल थे लेकिन उनके स्वास्थ्य ने अनुमति नहीं दी। तिलक मधुमेह से पीड़ित थे और इस समय तक बहुत कमजोर हो चुके थे। 1 जुलाई 1920 के मध्य में, उनकी स्थिति खराब हो गई और 1 अगस्त 1920 को उनका निधन हो गये। यह दुखद खबर के फैलते ही बड़ी संख्या में लोग उनके घर में पहुँच गए । अपने प्रेमी नेता की आखिरी झलक पाने के लिए बॉम्बे में उनके निवास पर 2 लाख से ज्यादा लोग इकट्ठे हुए।

उपसंहार

बाल गंगाधर तिलक की पहचान एक राष्ट्रवादी के रूप में की जाती है उनके राष्ट्रवाद का आधार धर्म और संस्कृति का केंद्र था। भले ही इन्हें अर्थशास्त्र का गहन ज्ञान नहीं था, फिर भी वर्तमान परिस्थितियों बाजार कृषि और उद्यम को लेकर उन्होंने अपने विचार राष्ट्र के समक्ष रखे, जो आज के समय में भी प्रासंगिक सिद्ध हो सकते हैं। तिलक मुक्त व्यापार नीति के पक्षधर थे, उनके विचार से सरकार का दायित्व सुरक्षा तक ही होना चाहिए उद्योग और व्यापार क्षेत्र में अतिरिक्त कराधान और बाधक नीतियों का लागू किया जाना अनुचित हैं। वे स्वदेशी बैंक की स्थापना की वकालत करते थे। उन्होंने 1906 में केसरी पत्रिका में लिखे लेख में इस विषय की ओर ध्यान आकर्षण करते हुए भारतीय व्यापार की उन्नति के लिए स्वदेशी बैंकों की स्थापना पर जोर दिया था। भारत में इसी साल बैंक ऑफ़ इंडिया की स्थापना हुई थी। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक कृषि को भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी मानते थे, परन्तु कृषि पर अत्यधिक निर्भरता के भी खिलाफ थे। उनके विचार में राष्ट्रीय आय के स्रोत कृषि तक सीमित\

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 01 | January - March 2022

नहीं किये जाने चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. एन0सी0 केलकर; लाइफ एण्ड टाइम्स आफ लोकमान्य तिलक, मद्रास 1920, है पृ0 76 |
2. बंगाल की क्रान्तिकारी पत्रिका संख्या में राजद्रोह समिति रालेट समिति प्रतिवेदन में उद्धृत, पृ0 18 |
3. आशा गुप्त; बाल गंगाधर तिलक में कवर पृष्ट पर उल्लिखित विजय लक्ष्मी, पण्डित के उदगार |
4. वही (बाल गंगाधर तिलक), आत्माराय एण्ड सन्ेस, दिल्ली 2001, पृ0 120-121 |
5. टी0 वी0 पर्वते; बाल गंगाघर तिलक पृ0 290 |
6. डॉ0 वी0पी0 वर्मा; आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मी नारायण 'अग्रवाल, आगरा, 2006-07, पृ0 329 |
7. वहीं, 1989 संस्करण, पृ0 278 |
8. वैलेण्टाइनशिरोल; इण्डियन अनरेस्ट, टाइम्स आफ इण्डिया प्रकाशन, पृ0 122 |
9. गोखले, पृ0 25 |
10. एन0सी0 केलकर; तिलकस ट्रायल आफ 1908, पृ0 197-98 |
11. टी0वी0 पर्वतेः बालगंगाधघर तिलक, प्रथम संस्करण 1968, पृ0 551 |